ध्यान दें:

21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

युधिष्ठिर से डरा हुआ भी दुर्योधन अपने को भय रहित प्रकट करता था। स्वयं अविश्वस्त होकर भी विश्वस्त के समान व्यवहार करता था। सन्देह युक्त होकर अपनी रक्षा के लिए विश्वसनीय बन्धुओं को अपने और दूसरे राज्य में सब जगह स्थापित कर रखा था। साम दाम दण्ड भेद चारों उपायों के विनियोग में कुशल दुर्योधन से उचित प्रकार से प्रयुक्त ये चार उपाय कैसे आपस में स्पर्धा करते उस दुर्योधन के सभी कार्यों में सफलता तथा समृद्धि सम्पादित करते थे उसे आप इस पाठ में जानेंगे। बहुत से राजा रथों अश्वों से व्याप्त दुर्योधन के सभा भवन के आंगन को कैसे शोभित करते थे वह भी जानेंगे। और इससे राजा दुर्योधन के प्रभुत्व की अत्यधिक विशेषता प्रकाशित हुई यह पढ़ेंगे। जब तक प्रजाओं के कल्याण में रत दुर्योधन का धन के स्वामी कुबेर के समान यह दया दान दक्षिणा आदि गुणों से कैसे पृथ्वी द्रवीभूत हुई। और उससे सम्मानित वीर योद्धा किस प्रकार हुए इस पाठ से हम जानेंगे। सभी राजा प्रसन्न होकर कैसे उसके शासन का अनुगमन करते थे यह बोध होगा। और उस राजा दुर्योधन से शास्त्र के अनुसार किस प्रकार से यज्ञों का अनुष्ठान करते थे यह स्पष्ट होगा। बलवान के साथ विरोध का दुष्परिणाम होता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- दुर्योधन शंकित होकर क्या करता है यह जानने में;
- सभी राजा कैसे उसके अनुगत हुए यह जानने में;
- उसने प्रजाओं के कल्याण के लिए क्या-क्या किया था यह जानने में;
- उसके सैनिक कैसे थे यह जानने में;
- बलवान के साथ विरोध का क्या फल है यह जानने में;
- श्लोकों की अच्छी व्याख्या कैसे करनी चाहिए। यह जानने में;

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

21.1) मूल पाठ

विधाय रक्षान्यरितः परेतरानशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः॥1.14॥

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य समयग्विनियोगसत्क्रिया।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः॥1.15॥

अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः॥1.16॥

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति॥1.17॥

महौजसो मानधना धनार्चिता धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्॥1.18॥

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥1.19॥

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धुभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥1.20॥

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥1.21॥

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्॥1.22॥

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता॥1.23॥

21.2) मूल पाठ

विधाय रक्षान्यरितः परेतरानशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः॥14॥

अन्वय- शंकितः सन्नपि परितः परेतरान् रक्षान् विधाय अशंकिताकारम् उपैति। क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताः सम्पदः अस्य कृतज्ञतां वदन्ति।

अन्वयार्थ- सन्देह युक्त होकर वह दुर्योधन चारों ओर सर्वत्र अपने और दूसरे राज्य में आत्मीय जनों को रक्षक 'जो गूढ़ मन्त्रणा आदि से दूसरे के वृतान्त को जानने में कुशल' को नियुक्त करके सन्देह रहित आकार को धारण करता है। स्वयं सन्देह युक्त भी सन्देह रहित आकार को दिखाता है। कार्यों के समाप्त होने पर सेवकों को दी गई सम्पत्तियाँ दुर्योधन की कृतज्ञता को प्रकाशित करती है।

सरलार्थ- शत्रुओं के बल की अधिकता से राजा दुर्योधन सन्देह युक्त है। इसीलिए अपने और दूसरे राज्य में विश्वास पात्रों को रक्षक के रूप में स्थापित करके सन्देह रहित आकृति को प्राप्त करता है। मन में भय का भाव होने पर भी अपने को भय रहित प्रकट करता है। और कार्यों के खत्म होने पर अनुचरों को दी गई सम्पत्ति दुर्योधन के उपकार का प्रकाशन करती हैं।

तात्पर्यार्थ- यहाँ इस श्लोक में दुर्योधन के भय भाव, सुरक्षा व्यवस्था, तथा दानादि से उत्पन्न कृतज्ञता के भाव का निरूपण किया गया है। वैसे ही स्वयं हमेशा सन्देह युक्त होकर भी सन्देह रहित के समान व्यवहार करता है। और शंकित भयभीत भी निर्भीकता को दिखाता है। इसीलिए वह अपनी रक्षा के लिए विश्वासपात्र बन्धुओं को सब जगह स्थापित करके रहता है। और अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए कार्य समाप्ति पर सेवकों को धन समर्पित करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परेतरान् - परेभ्य इतरे परेतरे।
- अशंकिताकारम् - शंका जाता अस्य इति शंकितः, न शंकितः अशंकितः, अशंकितः आकारो यस्मिन् इति अशंकिताकारम् क्रिया विशेषणम्।
- कृतज्ञताम् - कृतं जानाति इति।
- विधाय - वि + धा धातु + क्त्वा + (ल्यप्)
- उपैति - उप् + इण् धातु + लट् लकार।

सन्धि युक्त शब्द

- क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः - क्रियापवर्गेषु + अनुजीविसात्कृताः।

प्रयोग परिवर्तन

- शंकितेन तेन परितः परेतरान् रक्षान् विधाय अशंकिताकारम् उपेयते। क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताभिः सम्पद्धः अस्य कृतज्ञता उद्यते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ वृत्ति अनुप्रास अलंकार है। यहाँ रकार और तकार की आवृत्ति के कारण।

कोशः-

- परितः - समन्ततस्तु परितः सर्वतो विश्वगित्यपि।

पाठगत प्रश्न-1

1. कौन सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
2. और वह किसके जैसे होकर सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
3. और वह किस उपाय से सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
4. कैसी सम्पत्तियाँ उसकी कृतज्ञता को कहती है?
5. क्रियापवर्गेषु इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य समयग्विनियोगसत्क्रिया।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः॥15॥

ध्यान दें:

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

अन्वय- तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्भिताः विनियोगसत्क्रियाः उपायाः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतीः अर्थसम्पदः अनारतं फलन्ति।

अन्वयार्थ- उस दुर्योधन के द्वारा स्थानों में, उपादेय वस्तुओं में, कर्तव्यों में समुचित रूप से विभाजन करके उचित विनियोग के द्वारा सत्कारवान यथा स्थान प्रयोग किए गए राजनीति के चार उपाय साम, दान, दण्ड, भेद परस्पर संघर्ष को प्राप्त करके स्थिर भविष्य वाली धनसम्पत्ति निरन्तर उत्पन्न करते हैं।

सरलार्थ- उस राजा दुर्योधन ने उपादेय वस्तुओं में, कर्तव्य के अनुसार उचित विभाग किया। और समुचित रूप से वे चार राजनीति के उपाय प्रयोग किए। और वे परस्पर स्पर्धा को प्राप्त करके उसकी धन सम्पत्ति को स्थिर करते हैं। अर्थात् उचित रूप से प्रयुक्त ये सभी उपाय सब जगह उसकी सफलता के लिए समृद्धि को प्राप्त करते है।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में वर्णित है कि साम दान दण्ड भेद चार उपायों के विनियोग में दुर्योधन कुशल है। और उससे उचित प्रयुक्त ये चार उपाय है। वे परस्पर स्पर्धा करते हुए दुर्योधन के सभी कार्यों में सफलता तथा समृद्धि को सम्पादित करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विनियोगसत्क्रियाः - विनियोग एव सत्क्रिया येषां। (बहुब्रीह समास)
- अर्थसम्पदः - अर्थाः एव सम्पदः अर्थसम्पदः।
- परिबृंहितायतीः - परिबृंहितः आयतिः यासां ताः परिबृंहितायतः। (बहुब्रीह समास)
- लम्भिताः - लभ् धातु, क्त प्रत्यय, प्रथम पुरुष बहुवचन।
- विभज्य - वि + भज् धातु + क्त्वा + (ल्यप्)

सन्धि युक्त शब्द

- सम्यग्विनियोगसत्क्रिया - सम्यक् + विनियोगसत्क्रिया।
- फलन्त्युपायाः - फलन्ति + उपायाः।

प्रयोग परिवर्तन

- तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्भितैः विनियोगसत्क्रियैः उपायैः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतयः अर्थसम्पदः फलयन्ते।

कोशः-

- अनारतम् - 'सततानारताश्रान्तसन्ततताविरतानिशम्।'

पाठगत प्रश्न-2

6. किसके द्वारा और कहाँ वे उपाय प्रयोग किए गए?
7. वे पदों में और उसके द्वारा कैसे प्रयोग किए गए?

ध्यान दें:

8. वे उपाय कैसे और क्या उत्पन्न करते हैं?

9. प्रयोग किए गए वे उपाय किसको फलते हैं?

10. परिबृंहितायती: इसका क्या अर्थ है?

अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां भृशं नृपोपायनदन्तिनां मद:॥16॥

अन्वय- अयुग्मच्छदगन्धि: नृपोपायनदन्तिनां मद: अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयम् आस्थाननिकेतनाजिरं भृशम् आर्द्रतां नयति।

अन्वयार्थ- सप्तवर्ण नामक वृक्ष के पुष्प के समान गन्ध वाला राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों का मदजल अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरे हुए अनेकों राजाओं क्षत्रियों के रथों अश्वों से भरे हुए उस दुर्योधन के सम्बन्धी आस्था निकेतन के अर्थात् सभा भवन के आंगन को अत्यधिक गीला करता है।

सरलार्थ- सप्तपर्णी पुष्प की सुगन्ध के समान सुगन्धयुक्त राजाओं के उपहार भूत हाथियों का मदजल दुर्योधन के आंगन को गीला करता है। और उसके सभा भवन का आंगन बहुत से राजाओं के रथों घोड़ों से व्याप्त हैं। इससे राजा दुर्योधन की प्रभुता का अतिशय विशेष रूप से प्रकाशित होता है।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में दुर्योधन के अतिशय प्रभाव को निरुपित किया गया है। अनेकों राजा उस राजा के लिए बहुत से मदमत्त हाथी और अश्वों की इच्छा करते हैं। उन हाथी अश्व आदि से उस राजा के सभा भवन का आंगन हर क्षण भरा रहता। हाथियों के मद जल से गीला होता है। एवं हाथियों से भरा हुआ उसका आंगन दुर्योधन की अतिशय प्रभुता को प्रकाशित करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम्- राज्ञां समूहो राज्ञाम् अपत्यानि पुमांसो वा राजन्या: क्षत्रिया:। अनेके राजन्या इति अनेकराजन्या:। रथाश्च अश्वाश्च इति रथाश्वम्, तेषाम् अनेकराजन्यानां रथाश्वं तद् अनेकराजन्यरथाश्वं, तेन अनेकराजन्यरथाश्वेन संकुलम् इति अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम्।
- आस्थाननिकेतनाजिरम्- आस्थानस्य निकेतनम् आस्थाननिकेतन, तस्य आस्थाननिकेतनस्य आजिरमिति आस्थाननिकेतनाजिरम्।
- अयुग्मच्छदगन्धि: - अयुग्मानि विषमाणि सप्त छदा: पत्राणि यस्य स:, अयुग्मच्छद:। अयुग्मच्छदस्य गन्ध इव गन्धो यस्य स: अयुग्मच्छदगन्धि:।
- नृपोपायनदन्तिनाम् - उपायनानि दन्तिन: इति उपायनदन्तिन:। नृपाणां ये उपायनदन्तिन: ते नृपोपायनदन्तिन:, तेषां नृपोपायनदन्तिनाम्।

सन्धि युक्त शब्द

- नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रताम् - नयति + अयुग्मच्छदगन्धि: + आर्द्रताम्।

प्रयोग परिवर्तन

- अयुग्मच्छदगान्धिना नृपोपायनदन्तिनां मदेन अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयम् आस्थाननिकेतनाजिरं भृशम् आर्द्रतां नीयते।

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

कोशः -

- आजिरम् - अंगनं चत्वराज्ञिरे।

पाठगत प्रश्न-3

11. दुर्योधन के आंगन को क्या गीला करता है?
12. और उसे कैसे गीला करता है?
13. और उसे किस प्रकार का?
14. उसके सभा भवन के आंगन को क्या गीला करता है?
15. अयुग्मच्छदगन्धिः इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति॥17॥

अन्वय- चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति सति अदेवमातृकाः कुरवः अकृष्टपच्याः इव कृषिवलैः सुखेन लभ्याः सस्यसम्पदः दधतः चकासति।

अन्वयार्थ- बहुत समय से, उस दुर्योधन के प्रजाओं का कल्याण करते रहने पर पर्जन्य के ऊपर आश्रित न रहने वाला नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला कुरु देश जुताई के बिना ही पकी हुई सी किसानों के द्वारा सुख पूर्वक, अल्प प्रयास से प्राप्त होने वाली फसलों की सम्पत्तियों को धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है।

सरलार्थ- चिरकाल से दुर्योधन प्रजाओं का कल्याण करते हैं। उस कल्याण विधान समय में अप्राकृतिक नदियों के द्वारा नदियों के जल पर आश्रित होकर ही कुरु देश जीवनयापन कर रहा है। हलादि के द्वारा जुताई के बिना ही ये कुरुदेश फसलों का उत्पादक है। उससे किसानों को फसलें अल्प प्रयास से प्राप्त हो सके। एवं फसलों की समृद्धि को धारण करता हुआ कुरुदेश सुशोभित हो।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में प्रतिपादित है कि प्रजाओं के हित के लिए दुर्योधन संलग्न है। उसके ही प्रयास से समृद्ध कुरुदेश शोभित होता है। वैसे ही प्रजा पालन के लिए दुर्योधन ने अप्राकृतिक जल प्रवाह को निर्मित करा कर अपने राज्य को नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला करता है। जिससे प्रजा सुख से फसलों का उत्पादन कर सकें। और अपने राज्य से अन्नाभाव को दूर करें। एवं प्रजाओं के अनुरंजन से प्रसिद्ध वह दुर्योधन सरलता से वश में करने योग्य नहीं है। ऐसा यहाँ फलित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- देव एवं माता येषां ते देवमातृकाः, न देवमातृका इति अदेवमातृकाः।
- कृषीवलैः - कृषिरस्ति येषां ते कृषीवलास्तैः कृषीवलैः।
- रजः कृषि- वलच् प्रत्यय।
- अकृष्टपच्याः - कृष्टेन पच्यन्ते इति कृष्टपच्याः, न कृष्टपच्याः इति अकृष्टपच्याः।

- लभ्याः - लभ् धातु + यत् प्रत्यय।
- चकासति- चकास् धातु, लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- कृषिवलैरकृष्टपच्याः- कृषिवलैः + अकृष्टपच्याः।
- अदेवमातृकाश्चिराय - अदेवमातृकाः + चिराय।

प्रयोग परिवर्तन

- चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति सति अदेवमातृकैः कुरुभिः अकृष्टपच्या इव कृषिवलैः सुखेन लभ्याः दधद्भिः चकास्यते।

कोशः-

- देवमातृकः - देशो नद्यम्बुवृष्टयम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः। स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्।

पाठगत प्रश्न-4

16. कुरु देश क्या धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है?
17. और उनको सम्पत्ति किस सुख से प्राप्त होने वाली है?
18. कुरू देश में कैसे उन्हें सृमद्धि प्राप्त हुई?
19. कुरु जनपद कब से फसलों की समृद्धि को धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है?
20. अदेवमातृका इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥18॥

अन्वय- उदारकीर्तेः दयावतः अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशतः वसूपमानस्य अस्य गुणैः उपस्नुता मेदिनी स्वयं वसूनि प्रदुग्धे।

अन्वयार्थ- विशाल कीर्ति यश वाले अर्थात् महायशस्वी, दयालु करुणा से युक्त, रक्षा के द्वारा, शान्त हो गई बाधा वाले उपद्रव रहित अभ्युदय उन्नति को सम्पादित करते हुए कुबेर के तुल्य इस दुर्योधन के गुणों दया, दान, वीरता के द्वारा द्रवीभूत पृथ्वी अपने आप धनों को प्रदान करती है।

सरलार्थ- महायशस्वी दुर्योधन सदैव दयावान होकर प्रजा की रक्षा करता है। तथा संरक्षण से प्रजाओं में निर्विघ्न वृद्धि को सम्पादित करता है। कुबेर के समान इस दुर्योधन के दया, दान, दक्षिणा आदि गुणों से पृथ्वी द्रवीभूत हुई। एवं पृथ्वी द्रवीभूत होकर स्वयं ही धन को दे रही है। अर्थात् मांगें बिना ही सुख से धन को देती है।

तात्पर्यार्थ- कैसे उत्तम गुणों से भूषित दुर्योधन सारी प्रजा की रक्षा करता है। और कैसे उस प्रजाओं की उन्नति को सिद्ध करता है। वह ही इस श्लोक में वर्णित किया गया है। जैसे कोई नई प्रसूता गाय कोमल पत्तों से तुष्ट होकर स्वयं दूध को क्षरती है। उसी के समान बिना जल के देश में प्रजा के कल्याण से सन्तुष्ट प्रजा राजा की आज्ञा के बिना ही समय पर कर देती है।

ध्यान दें:

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उदारकीर्त्तेः - उदारा कीर्त्तिर्यस्य स उदारकीर्तिः, तस्य उदारकीर्त्तेः। (बहुव्री समास)
- दयावतः - दयाऽस्यास्तीति दयावान्, तस्य दयावतः।
- वसूपमानस्य - वसुः उपमानं यस्य स वसूपमानः। (बहुव्रीह समास)
- दिशतः- दिश् धातु + शतृ प्रत्यय
- प्रदुग्धे - प्र + दुह् धातु, आत्मने पद, लट् लकार।

सन्धि युक्त शब्द

- उदारकीर्तेरुदयम् - उदारकीर्तेः + उदयम्।
- दिशतोऽभिरक्षया - दिशतः + अभिरक्षया।

प्रयोग परिवर्तन

- उदारकीर्तेः दयावतः अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशतः वसूपमानस्य अस्य गुणैः उपस्तुतया मेदिन्या स्वयं वसूनि प्रदुह्यन्ते।

कोशः -

- दया- कृपा दयाऽनुकम्पा स्याद्

पाठगत प्रश्न-5

21. पृथ्वी अपने आप क्या करती है?
22. और वह किस प्रकार की है?
23. यहाँ दुर्योधन किससे उपमित है?
24. वह दुर्योधन किस प्रकार अभ्युदय को सम्पादित करता है?
25. कैस दुर्योधन प्रजा की रक्षा करता है?

मूल पाठ

महौजसो मानधना धनार्चिता धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।19॥

अन्वय- महौजसः मानधनाः धनार्चिताः संयतिल लब्धकीर्तयः धनुर्भृतः न संहताः न भिन्नवृत्तयः अपि तु तस्य असुभिः प्रियाणि समीहितुं वांछन्ति।

अन्वयार्थ- महाबलशाली अत्यधिक पराक्रमी, मान ही है धन जिसका अर्थात् अभिमानी, मनस्वी, धन से पूजित किए गए युद्ध में कीर्ति को प्राप्त किए हुए संगठित न होने वाले और प्रतिकूल आचरण न करने वाले , सभी योद्धा उस दुर्योधन के अपने प्राणों से भी प्रिय कार्यों को करना चाहते हैं।

सरलार्थ- महा तेजस्वी, प्रचुर धन दान से सम्मानित दुर्योधन के वीर योद्धा युद्ध मे कीर्ति को प्राप्त

हैं। और वे धनुर्धारी अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नहीं आते। और वे अपने राजा के विरुद्ध नहीं हैं। परन्तु स्वामी के उद्देश्य के साधक ही है। और उसके लिए अपने प्राण देने की भी वे इच्छा रखते हैं।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में महाकवि भारवि ने वीर सैनिकों के सुन्दर गुणों का वर्णन किया है। वे राजा के हित के साधक हैं। सरल उपाय से वह दुर्योधन वश में नहीं होगा यह वनेचर का अभिप्राय है। क्योंकि वे तेजस्वी धनुर्धारी योद्धा अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नहीं आते। अपितु वे अपने स्वामी के उद्देश्य को अपने प्राणों से भी सम्पादित करने की इच्छा करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महौजसः - महद् ओजो येषां ते- बहुव्रीहि समास।
- मानधनाः - मान एव धनं येषां ते- बहुव्रीहि समास।
- लब्धकीर्त्तयः - लब्धा कीर्तिर्यैस्ते लब्धकीर्त्तयः- बहुव्रीहि समास।
- धनुर्भृतः - धंनूषि बिभ्रतीति धनुर्भृत्।
- समीहितुम् - सम् + इह धातु तुमुन् प्रत्यय।

सन्धि युक्त शब्द

- वांछन्त्यसुभिः - वांछन्ति + असुभिः।
- संहतास्तस्य - संहताः + तस्य।

प्रयोग परिवर्तन

- महौजोभिः मानधनैः धनार्चितैः धनुर्भृद्भिः संयति लब्धकीर्तिभिः न संहतैः न भिन्नवृत्तिभिः भूयन्ते। किन्तु असुभिरपि प्रियाणि समीहितुं वांछयन्ते।

कोशः-

- असुः - पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चौवं जीवोऽसुधारणम्।

पाठगत प्रश्न-6

26. दुर्योधन के सैनिक कैसे हैं?
27. वे कहाँ कीर्ति को प्राप्त करने वाले हैं?
28. वे क्या करना चाहते हैं?
29. और कैसे वे इच्छा करते हैं?
30. वे योद्धा किस प्रकार के हैं?

मूल पाठ

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धुभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥20॥

ध्यान दें:

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

अन्वय- अशेषितक्रियः सच्चरितैः चरैः महीभृतां क्रियाः निःशेषं वेद। हितानुबन्धिभिः महोदयैः धातुः ईहितम् इव तस्य ईहितम् फलैः प्रतीयते।

अन्वयार्थ- कार्यों को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने वाला, कार्यों को अपूर्ण न छोड़ने वाला वह दुर्योधन शुद्ध चरित वाले गुप्तचरों के द्वारा दूसरे राजाओं की क्रिया को पूरी तरह से जानता है। हितकारी परिणाम वाले सदैव कल्याण के लिए तत्पर अत्यधिक उत्कर्ष करने वाले विधाता की तरह उस दुर्योधन की चेष्टा को परिणामों के द्वारा जाना जाता है।

सरलार्थ- सारे राजकार्यों को समाप्त करके वह दुर्योधन शुद्ध चरित्र और उत्तम गुप्तचरों के द्वारा सभी राजाओं के व्यवहार को गुप्त रूप से जानता है, परन्तु जैसे ईश्वर की क्या करने की इच्छा है उसके कार्यों से ही जाना जाता है। उसी प्रकार उस दुर्योधन के मन की चेष्टा उसके हितकारी परिणामों से ही जानी जाती है।

तात्पर्यार्थ- महाकवि भारवि ने प्रस्तुत इस श्लोक में अपने मन्त्र का गोपन तथा दूसरे वृतान्त के ज्ञान में दुर्योधन की गुप्तचर व्यवस्था को निरुपित किया है। वैसे ही दुर्योधन ने गुप्तचरों की सहायता से सभी राजाओं के सम्पूर्ण गूढ़ व्यवहार को जानता है। उसका मानसिक संकल्प उसके कार्य के परिणाम द्वारा प्रतीत होता है। इसीलिए उसे सरलता से नहीं जाना जा सकता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महीभृताम् - महीं बिभ्रतीति महीभृतः।
- सच्चरितैः- सत् चरितं येषां ते सच्चरिताः। बहुव्रीहि समास।
- अशेषितक्रियः - न शेषिता अशेषिता इति - न् तत्पुरुष।, अशेषिता क्रिया येन सः- बहुव्रीहि समास।
- हितानुबन्धिभिः - हितम् अनुबध्नन्तीति।
- वेद - विद्, धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- सच्चरितैश्चरैः- सच्चरितैः + चरैः।
- धातुरिवेहितम् - धातुः + इव + ईहितम्।
- महोदयैस्तस्य - महोदयैः + तस्य।

प्रयोग परिवर्तन

- अशेषितक्रियेण येन दुर्योधनेन सच्चरितैश्चरैरन्येषां महीभृतां क्रियाः ज्ञायन्ते विद्यन्ते। हितानुबन्धिना महोदया धातुरीहितमिव तस्य चेष्टितम् फलैः प्रतियन्ति।

अलंकार आलोचना

- इस श्लोक में भी धातुरिव उसके साम्य प्रतिपादन से उपमा अंलकार है।

कोशः-

- धाता - स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृग्विधिः।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-7

31. दुर्योधन किसके कार्यों को पूरी तरह से जानता है?

32. और वह किससे उसे जानता है?

33. और वह दुर्योधन किस प्रकार का है?

34. विधाता की चेष्टा किससे प्रतीत होती है?

35. किस प्रकार के फल से दुर्योधन की चेष्टा प्रतीत होती है?

मूल पाठ

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥21॥

अन्वय- तेन क्वचित् सज्यं धनुः न उद्यतं वा कोपविजिह्मम् आननम् न कृतं गुणानुरागेण नराधिपैः अस्य शासनं माल्यमिव शिरोभिः उह्यते।

अन्वयार्थ- उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष को न उठाया गया न ऊपर किया गया। अथवा क्रोध से मुख को टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा इस दुर्योधन का आदेश वचन, दया दाक्षिण्यादि गुणों के अनुराग से पुष्प माला की तरह सिरों से धारण किया जाता है।

सरलार्थ- उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष नहीं उठाया गया। अथवा अपने मुख को क्रोध से टेढ़ा नहीं किया। फिर भी राजाओं के द्वारा इस दुर्योधन के आदेश वचनों को सादर पुष्प माला के समान स्वीकार किया जाता है। जैसे सूत्रों गुम्फित पुष्प माला अपने मस्तक पर सादर धारण करते हैं। अर्थात् सभी राजा प्रसन्न होकर उसकी आज्ञा का अनुगमन करते हैं।

तात्पर्यार्थ- सद्गुणों से अलंकृत दुर्योधन का समृद्ध प्रभाव यहाँ निरुपित किया है। अब कोई भी राजा दुर्योधन के प्रतिकूल आचरण नहीं करता। उसने भी कभी क्रोध से लोगों को वश में करने के लिए धनुष नहीं उठाया। न उसने कभी मुख पर क्रोध विकार दिखया। फिर भी उसके गुणों के समूह से वशीकृत राजा उसकी आज्ञा को माला की तरह अपने मस्तक पर स्वीकार करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सज्यम् - ज्यया सहितं सज्यम्। तृतीय तत्पुरुषः।
- कोपविजिह्मम् - कोपेन विजिह्मं।
- गुणानुरागेण - गुणेषु अनुरागो गुणानुरागः।
- नराधिपैः - नराणामधिपा नराधिपा।
- उह्यते - वह धातु, कर्मणि, लट् लकार।

सन्धि युक्त शब्द

- शिरोभिरुह्यते - शिरोभिः + उह्यते।
- नराधिपैर्माल्यम् - नराधिपैः + माल्यम्।

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

प्रयोग परिवर्तन

- स क्वचित् सज्यं धनुः नोद्यतवान्। वा कोपविजिह्मम् आननं न कृतवान्। नराधिपाः गुणानुरागेण अस्य शासनं माल्यमिव शिरोभिः वहन्तीति।

अलंकार आलोचना

- इस श्लोक में माल्यमिव शासनम् इन दोनों में साम्य प्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

कोशः-

- कोपः - कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट् क्रुधौ खियौ।

पाठगत प्रश्न-8

36. दुर्योधन के द्वारा क्या कहीं भी नहीं उठाया गया?
37. और उसने मुख को किस प्रकार नहीं किया?
38. राजाओं के द्वारा क्या सिरों से धारण की जाती है?
39. और वह किसके समान सिरों से धारण की जाती है?
40. राजाओं के द्वारा किसलिए आज्ञा को सिरों से स्वीकार किया जाता है?

मूल पाठ

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्॥22॥

अन्वय- इद्धशासनः सः यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं दुःशासनं निधाय मखेषु अखिन्नः पुरोधसा अनुमतः सन् हव्येन हिरण्यरेतसं धिनोति।

अन्वयार्थ- प्रज्वलित शासन वाला जिसके आदेश का उल्लंघन नहीं करता वह दुर्योधन युवराज के पद पर नई युवावस्था के कारण प्रबल दुशासन को अर्थात् अपने छोटे भाई को युवराज पद पर नियुक्त करके यज्ञों में बिना खिन्न हुए पुरोहित के द्वारा अनुमति प्राप्त करके हवि के द्वारा अग्नि को तृप्त करता है।

सरलार्थ- अनतिक्रमणीय शासन वाले दुर्योधन ने युवराज के पद पर अपने छोटे भाई दुशासन को नियुक्त किया। और स्वयं निश्चित होकर पुरोहितों के आदेशानुसार हवि से अग्नि को प्रसन्न करता है। और वह दुर्योधन यज्ञादि कर्मों में प्रसन्न होकर धर्म का आचरण करता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में महाकवि भारवि ने दुर्योधन के धर्माचरण को निरूपित किया है। वैसे ही सामादि से राज्य को सुदृढ़ करके देवों की सहायता के लाभ के लिए यज्ञादि धर्म कर्म से धर्म का आचरण करता है। और उसके लिए राजकार्य के संचालन का भार दुर्योधन ने अपने भाई को दे दिया। और पुरोहित की आज्ञा अनुसार यज्ञादि का अनुष्ठान आरम्भ किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- यौवराज्ये- युवा चासौ राजा चेति युवराजः - कर्मधारय समास। तस्य कर्म यौवराज्यम् - तत्पुरुष समास।

- नवयौवनोद्धतम् – नवं चासौ यौवनं – कर्मधारय समास, नवयौवनेन उद्धतो नवयौवनोद्धतः – तृतीय तत्पुरुष।
- इद्धशासनम् – इद्धं शासनं यस्य स- बहुव्रीहि समास
- हिरण्यरेतसम् – हिरण्यं रेतो यस्य स हिरण्यरेताः – बहुव्रीहि समास
- निधाय – नि + धा धातु + क्त्वा + ल्यप् प्रत्यय।

सन्धि युक्त शब्द

- मखेष्वखिन्नोऽनुमतः – मखेषु + अखिन्नः + अनुमतः।

प्रयोग परिवर्तन

- तेन इद्धशासनेन यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं दुःशासनं निधाय मखेषु अखिन्नेन पुरोधसाऽनुमतेन हव्येन हिरण्यरेताः धिन्व्यते।

कोशः –

- हिरण्येरतः – हिरण्यरेतहुतभुग्दहनो हव्यवाहनः इति।

पाठगत प्रश्न-9

41. किस प्रकार से दुर्योधन अग्नि को प्रसन्न करता है?
42. उसने कहाँ और किसे नियुक्त किया?
43. दुर्योधन किसके द्वारा अग्नि को तृप्त करता है?
44. किस विषय में दुर्योधन निरन्तर अग्नि को तृप्त करता है?
45. और वह किसकी अनुमति से अग्नि को तृप्त करता है?

मूल पाठ

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता॥23॥

अन्वय- स प्रलीनभूपालं स्थिरायति आवारिधि भुवः मण्डलम् प्रशासत् अपि त्वत् एष्यतीः भियः, चिन्तयति एव। अहो बलवद्विरोधिता दुरन्ता भवति।

अन्वयार्थ- वह दुर्योधन विलीन हो गए है राजा जिसमें उस शत्रुभूत राजाओं से रहित निश्चित भविष्य वाले समुद्र पर्यन्त भूमण्डल पर शासन करता हुआ भी आप से आने वाली विपत्तियों को सोचता है। आश्चर्य है बलवानों के साथ शत्रुता दुःखमय फल वाली होती है।

सरलार्थ- सभी राजाओं को पराजित करके शत्रुरहित बहुत समय तक स्थायी सम्पूर्ण पृथ्वी का वह दुर्योधन नहीं अकेला शासक है। किन्तु अपनी पराजय से शंकित वह आपसे डरता है। इसीलिए वह सुख से नहीं रह सकता। क्योंकि बलवान के साथ विरोध दुष्परिणामी होता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में महाकवि भारवि ने वर्णित किया है कि दुर्योधन शत्रुरहित पृथ्वी का

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

पाठ-21

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल

ध्यान दें:

अकेला शासक है। परन्तु फिर भी वह अपनी पराजय से शंकित युधिष्ठिर से डरता है। क्योंकि बलवानों के साथ विरोध सदैव समूलनाश के लिए ही होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रलीनभूपालम् - प्रलीना भूपाला यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् बहुव्रीहि समास।
- स्थिरायति - स्थिरा आयतिः यस्य तत् - बहुव्रीहि समास।
- आवारिधि - आ वारिधिभ्य इति। - अव्ययीभाव समास।
- बलवद्विरोधिता - बलमस्यास्तीति बलवान्, बलवद्धिः विरोधिता। तृतीय तत्पुरुष।
- प्रशासत् - प्र +शास् धातु, लट् लकार, शतृ प्रत्यय।
- एष्यतीः - इण् धातु, लृट् लकार, शतृ प्रत्यय। स्त्रीलिङ्ग में ङीप्

सन्धि युक्त शब्द

- चिन्तयत्येव - चिन्तयति + एव।
- भियस्त्वदेष्यतीरहो - भियः + त्वदेष्यतीः + अहो।

प्रयोग परिवर्तन

- तेन दुर्योधनेन प्रलीनभूपालं स्थिरायति, आवारिधि भुवो मण्डलं प्रशासता, त्वदेष्यत्यो भियः, चिन्त्यन्ते एव। अहो बलवद्विरोधितया दुरन्तया भूयते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ चतुर्थ पाद से तीनों चरणों के अर्थ के समर्थन से अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

कोशः-

- भीः - भीतिर्भीः साध्वसं भयम्।

पाठगत प्रश्न-10

46. वह दुर्योधन किस प्रकार के मण्डल को शासित करता है?
47. बलवान से विरोध कैसा होता है?
48. वह क्या चिन्तन करता है?
49. प्रलीनभूपालम् इसका क्या अर्थ है?
50. आवारिधि इसका क्या अर्थ है?

पाठ सार

शत्रुओं के बल के आधिक्य से राजा दुर्योधन शंकित है। इसीलिए अपने और दूसरे के राज्य में बन्धुजनों को रक्षक के रूप में नियुक्त करके सन्देह रहित आकृति को प्राप्त करता है। मन में भय का

ध्यान दें:

अनुभव होते हुए भी अपने को भय रहित प्रकट करता है। और कार्यों के खत्म होने पर सेवकों को समर्पित सम्पत्तियाँ दुर्योधन की कृतज्ञता को प्रकाशित करती है। उस राजा दुर्योधन ने उपादेय वस्तुओं में कर्तव्य के अनुसार उचित प्रकार से विभाजित किया। और समुचित रूप से वे चार उपाय राजनीति में प्रयुक्त है। और वे आपस में स्पर्धाभाव को प्राप्त करके उसकी धन सम्पत्ति को स्थिर करते हैं। अर्थात् समुचित रूप से प्रयुक्त ये सभी उपाय सब जगह उसकी सफलता समृद्धि को देते हैं। सप्तपर्णी पुष्प की सुगन्ध के समान सुगन्ध युक्त राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आंगन आर्द्रता को प्राप्त करता है। और वह सभा भवन का आंगन बहुत से राजाओं के रथों और अश्वों से व्याप्त है। इससे राजा दुर्योधन की प्रभुता का आधिक्य विशेष रूप से प्रकाशित होता है। बहुत समय से दुर्योधन प्रजाओं के कल्याण का वितरक है। उसके मंगल विधान समय में अप्राकृतिक नदियों का आश्रय लेकर ही कुरु देश जीवित हैं। हलों के द्वारा बिना जुताई के ही ये कुरु देश फसलों का उत्पादक है। इसीलिए किसानों के द्वारा फसल सम्पदा अल्प प्रयास से ही प्राप्त है। एवं फसल सम्पदा को धारण करता हुआ वह कुरुदेश शोभित होता है। महा यशस्वी दुर्योधन दयावान होकर सदैव प्रजा की रक्षा करता है। और संरक्षण से प्रजाओं की निर्विघ्न उन्नति को सम्पादित करता है। धनाधिपति कुबेर के समान इस दुर्योधन के दया दान दाक्षिण्य आदि गुणों से पृथ्वी द्रवीभूत हुई। एवं पृथ्वी द्रवीभूत होकर स्वयं ही धन को देती है। अर्थात् याचना के बिना ही सुख से धन को प्रदान करती है। महा तेजस्वी प्रचुर धन दान से सम्मानित दुर्योधन के वीर योद्धाः समर में कीर्ति को प्राप्त किए हुए हैं। और वे धनुर्धारी अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु नहीं आते। वे अपने स्वामी के प्रतिकूल नहीं है। परन्तु स्वामी के उद्देश्य के साध क ही है। और उसके लिए वे अपने प्राणों का दान करने के लिए भी अभिलषित हैं। सभी राजकार्यों को समाप्त करके वह दुर्योधन शुद्ध चरित्र और उत्तम गुप्तचरों के द्वारा सभी राजाओं के व्यवहार को गूढ़ रूप् से जानता है। किन्तु जैसे विधाता की क्या करने की इच्छा है यह उसके कार्यों के द्वारा ही जानते हैं। उसी प्रकार उस दुर्योधन के मन के अभीष्ट कार्य को भी उसके हितकारी परिणामों से ही जाना जाता है। उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष को नहीं उठाया गया। अथवा अपने मुख को क्रोध से टेढ़ा नहीं किया। तो भी राजाओं के द्वारा उस दुर्योधन की आज्ञा को सादर फूलमाला के समान स्वीकार किया जाता है। जैसे सूत्र में गुम्फित पुष्प माला को ससम्मान सिर पर धारण करते हैं। अर्थात् सभी राजा प्रसन्न होकर उसके शासन का अनुगमन करते हैं। अनतिक्रमणीय शासन वाले दुर्योधन ने युवराज के पद पर अपने छोटे भाई दुशासन को नियुक्त किया। और स्वयं निश्चिंत होकर पुरोहितों के आदेशानुसार हवि के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। एवं वह दुर्योधन यज्ञादि कर्मों में प्रसन्न होकर धर्म का आचरण करता है। सभी राजाओं को पराजित करके शत्रु रहित सम्पूर्ण पृथ्वी को उस दुर्योधन ने अकेले ही शासित किया। किन्तु अपनी पराजय से शंकित वह आपसे डरता है। इसीलिए वह सुख से नहीं रह पाता। क्योंकि बलवानों के साथ विरोध दुष्परिणामी ही होता है।

पाठान्त प्रश्न

1. शंकित दुर्योधन कैसे सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
2. उसके सभी उपाय कैसे सदैव उसे सफलता और समृद्धि प्रदान करते हैं?
3. उसके सभा भवन के आंगन को अत्यधिक गीला करता है। इससे कैसे उसकी प्रभुता प्रकट होती है?
4. दुर्योधन का प्रजा रक्षण कैसा था?
5. उसके सैनिक कैसे थे वर्णित कीजिए।

ध्यान दें:

6. पर्जन्यों के आश्रित न रहते हुए भी कुरु कैसे फसलों की सम्पत्तियों को धारण करता हुआ सुशोभित हो रहा है?
7. उसके कार्य कैसे फलों के द्वारा ज्ञात किए जाते थे?
8. राजा उससे प्रभावित थे दृष्टान्त को वर्णित कीजिए।
9. दुर्योधन क्या क्या करके धर्म आचरण को करता है?
10. बलवान से विरोध कैसे दुष्परिणामी होता है?
11. समानार्थक धातु रूप को मिलाइए।

क-स्तम्भ	**ख-स्तम्भ**
1. धिनोति	क. धार्यते
2. प्रतीयते	ख. जुहोति
3. उपैति	ग. प्राप्नोति
4. फलन्ति	घ. प्रदोग्धि
5. चकासति	ङ अभिलषति
6. प्रदुग्धे	च. प्रसुवते
7. वांछति	छ. विराजन्ते
8. उह्यते	ज. ज्ञायते

उत्तर

1. ख 2. ज 3. ग 4. च 5. छ
6. घ 7. ङ 8. क

आपने क्या सीखा

1. दुर्योधन कैसे भयभीत होता था इस पाठ से जानते हैं।
2. राजा दुर्योधन सरलता से जीतने योग्य नहीं था। यह भी जानते हैं।
3. राजाओं में उसका प्रभाव कैसा था यह स्पष्ट होता है।
4. वीर योद्धा कैसे प्रकृति से प्रभुकार्य में रत होते हैं स्पष्ट है।
5. बलवानों के साथ विरोध दुष्परिणामी होता है ऐसा जाना।
6. समास और उसके विग्रह कैसे होते है इस पाठ से समझा।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. दुर्योधन

2. शंकित होकर
3. चारों ओर आत्मीय जनों को रक्षक नियुक्त करके।
4. कार्यों के समाप्त होने पर सेवकों को दी गई सम्पत्तियाँ।
5. कार्यों के समाप्त होने पर

उत्तर-2

6. दुर्योधन के द्वारा, पदों में
7. उचित विभाग करके
8. निरन्तर, स्थिर भविष्य वाली धन सम्पत्ति
9. स्पर्धा को प्राप्त हुए से
10. स्थिर

उत्तर-3

11. सभा भवन के आंगन को
12. अत्यधिक
13. अनेक राजाओं के रथों और घोडों से भरे हुए।
14. राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों का सप्तपर्ण के पुष्प के समान गन्ध वाला मदजल
15. सप्तपर्ण नामक वृक्ष के पुष्प के समान गन्ध वाला।

उत्तर-4

16. फसलों की सम्पत्तियों को।
17. किसानों के द्वारा।
18. जुताई के बिना ही पकी हुई सी।
19. चिर काल से उस दुर्योधन के प्रजाओं का कल्याण।
20. नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला।

उत्तर-5

21. धनों को प्रदान करती है
22. इस दुर्योधन के गुणों के द्वारा द्रवीभूत हुई।
23. धनों से
24. उपद्रव रहित
25. महायशस्वी, दयावान

ध्यान दें:

ध्यान दें:

उत्तर-6

26. महाबलशाली मनस्वी धन से सत्कृत।
27. युद्ध में
28. अभीष्ट कार्यों को करना चाहते है।
29. अपने प्राणों से
30. संगठित न होने वाले, प्रतिकूल आचरण न करने वाले।

उत्तर-7

31. राजाओं की
32. शुद्ध चरित्र वाले गुप्तचरों के द्वारा
33. कार्यों को पूर्ण रूप से समर्पित करने वाला।
34. उसके परिणामों के द्वारा
35. हितकारक परिणाम वाले, अत्यधिक उत्कर्ष वाले

उत्तर-8

36. प्रत्यंचा से युक्त धनुष
37. क्रोध से कुटिल
38. दुर्योधन का आदेश
39. पुष्प माला की तरह
40. गुणों के अनुराग से

उत्तर-9

41. अनतिक्रमणीय शासन वाला
42. युवराज के पद पर, नवीन युवावस्था के कारण प्रगल्भ
43. हवि के द्वारा
44. यज्ञों में
45. पुरोहित के द्वारा

उत्तर-10

46. शत्रुभूत राजाओं से रहित
47. दुष्परिणामी
48. तुमसे उत्पन्न होने वाली विपत्तियों को
49. शत्रुभूत राजाओं से रहित
50. समुद्रपर्यन्त